इडक्का
केरल का ताल-वाद्ययंत्र

परिचय

इडक्का या एडक्का केरल का ताल-वाद्ययंत्र जो एक डमरू के समान है। जहां डमरू उस पर बंधे रस्सी से तीव्र ध्वनि निकालकर बजाया जाता है वहीं इडक्का बांयें कंधे पर कपड़े की पट्टी के माध्यम से लटका कर खड़े रहकर उसके दाहिने भाग पर लकड़ी की पतली छड़ी से बजाया जाता है वहीं दूसरे हाथ से इसके मुख्य भाग और रस्सी की स्थिति को संचालित किया जाता है। यह अकेला ऐसा तालवाद्य है जो संगीत के विविध स्वरों को सृजित कर सकता है।

यह केरल के पंचवाद्यम के पांच वाद्ययंत्रों में से एक है जिसे देववाद्यम माना जाता है यह मंदिरों में पूजा के दौरान बजाया जाता है या सोपानम संगीत के साथ संगत के रूप में बजाया जाता है। यह कथकली, मोहिनी अट्टम, कृष्णाट्टम जैसे विभिन्न नृत्य रूपों की प्रस्तुति के दौरान भी बजाया जाता है।

श्रेणी / Category:
संगीत/Musical

समुदाय / Community:
लोक / Folk

आरोहण क्र : 2016.13
Accession No. : 2016.13

संकलन स्थान/ Place of collection :
कन्नूर, केरल/ Kannur, kerala

Idakka
A percussion instrument of Kerala

Introduction

The Idakka or edakka is a percussion instrument of Kerala and it is very similar to the Damru. While the Damru is played by rattling the knotted cords against the resonators whereas the idakka is hung from the left shoulder with the help of cloth strap and it is played while standing only with a curved wooden stick from the right side of instrument while the position of its body and string are manipulated simultaneously with the other hand. This is the only drum which can create all the variety of musical notes.

It is one of the five instruments that constitute the panchvadhyam ensemble of Kerala and considered to be Devavadyam. It is played during the puja at temple or as the accompaniment to the sopanam music and it is also played during presentation of different dance forms like Kathakali, Mohiniattam and Krishnattam.

अलंकरण एवं प्रतीकात्मकता

इडक्का एक दिव्य वाद्ययंत्र माना जाता है खासकर यह जब सोपानम संगीत और मंदिरों में जाते समय तथा पूजा सत्रों के दौरान भक्ति भावना को जागृत करने के लिये इसका प्रयोग किया जाता है।

- मध्य भाग शरीर "कुट्टी" का स्वरूप है।
- इडक्का की दो झिल्लियां "वट्टम" सूर्य और चंद्रमा का प्रतीक है।
- किनारों पर स्थित दो तार जीवात्मा और परमात्मा का प्रतीक है।
- झिल्लियों के किनारों पर बने छः छिद्र जिनसे दोनों झिल्लियां आपस में जोड़ी जाती हैं छः भारतीय वैज्ञानिक सिद्धांतों का प्रतीक है।
- लकड़ी की चार छड़ियां "जीवककोल" चार वेदों - साम, रिग, यजुर और अथर्व वेद को इंगित करता है।
- 64 गोल ऊनी गेंदे "पोडुप्पुकल" विभिन्न 64 भारतीय कलाओं को दर्शाती हैं।
- कपड़े की पट्टी "थोलकाचा" जिसके द्वारा वाद्ययंत्र को कंधे पर लटकाया जाता है शिव के पवित्र नाग का प्रतीक है।

Ornamentation & Symbolism

Idakka is considered as a divine instrument, especially when it is used during sopanam music and while going to the temple, during puja sessions for creating a mood of devotion

- The central part "Kuttyi" forms the body
- Two membranes "Vattam" of Idakka symbolizes sun and moon.
- The two strings at the edge are forms the individual and universal soul.
- Four wooden sticks "Jeevakkol" represent the four Vedas – Sam, Rig, Yajur and Atharva Veda
- The 64 woolen balls "Poduppukal" symbolize the 64 Indian art forms.
- The cloth strap "Tholkacha" is used to hang the instrument from the presenter's left shoulder, it represents the holy snake of Lord Shiva.

निर्माण की प्रक्रिया / Making Process

इडक्का का मुख्य भाग "कुट्टी" कटहल के वृक्ष के मध्य भाग को खोखला कर बनाया जाता है, इसके दोनो छोर एक ही चौड़ाई के होते है, इसका मध्य भाग अपेक्षाकृत पतला होता है और वहां एक वायुरंध्र होता है जिसे इसकी नाभिका भी कहते हैं। एक इंच मोटी और लगभग 8 इंच व्यास के दो वलय कटहल की लकड़ी से बने होते हैं जिसमें छः छिद्र तारों को बांधने हेतु किये जाते हैं। वलयों पर चमड़ी को इस तरह से फ़ंसाया जाता है जिससे यह छोरों की परिधि से बाहर आ सके। यह चमड़ी गाय के पेट की अंदरूनी परत से बनी होती है जिसे उबले चावल और सूखे गोबर की राख के मिश्रण से वलयों पर चिपकाया जाता है। इडक्का के दो छोर होते हैं परन्तु एक ही छोर बजाने के लिये उपयोग होता है जिसे पहचान के लिये रंगीन ऊनी गेंदों को उपयोग किये जाने वाले छोर की तरफ़ बांधा जाता है।

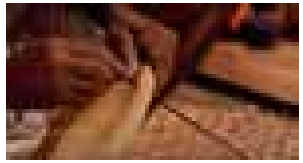
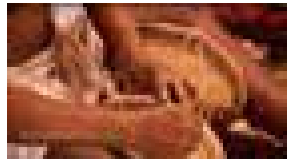
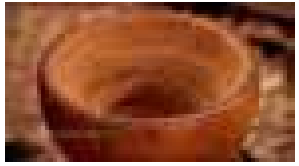

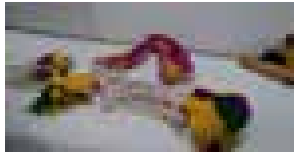

The body of the Idakka is made up of the core of jackfruit tree trunk which is hollow from inside. Both the ends of its body are of the same width, center part of the body is comparatively taper and there is a hole for the passing of air which is called its navel. Two rings each of one inch thickness are made up of jackfruit wood having a diameter of about 8 inches and 6 holes are drilled in these rings for tying the strings. After that, the membrane should be stuck on the rings in such a manner that it covers and reaches out of the circumference of the rings. The membrane is made from the inner wall of the cow's stomach and is stuck on to the rings with a paste made by using boiled rice mixed with cow dung ash. Both the membrane covered rings are fixed on either end of the body with cotton ropes. Idakka has two sides but only the front side is used to play it. To identity the frontal side, colourful woolen balls are tied on to that side.